18-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – विचार सागर मंथन कर एक ऐसी टॉपिक निकालो जो सब जगह एक ही टॉपिक पर भाषण चले, यही है तुम्हारी युनिटी''

प्रश्न:- कौन-सी मेहनत करते-करते तुम बच्चे पास विद् ऑनर हो सकते हो?

उत्तर:- कर्म-बन्धन से अतीत बनो। जब किसी से बात करते हो तो आत्मा भाई समझ भाई को देखो। बाप से सुनते हो तो भी बाप को भृकुटी में देखो। भाई-भाई की दृष्टि से वह स्नेह और सम्बन्ध पक्का हो जायेगा। यही मेहनत का काम है, इससे ही पास विद् आनर बनेंगे। ऊँच पद पाने वाले बच्चे यह पुरूषार्थ अवश्य करेंगे।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सदा नशा रहे कि हम संगमयुगी ब्राह्मण, देवताओं से भी ऊँच हैं क्योंकि अभी हम ईश्वरीय औलाद हैं, हम मास्टर ज्ञान सागर हैं। सभी खूबियाँ इस समय हमारे में भर रही हैं।

2) जो बाप समझाते हैं वही बुद्धि में रखना है, बाकी कुछ भी सुनते हुए न सुनो, देखते हुए न देखो। हियर नो ईविल, सी नो ईविल...

वरदान:- ईश्वरीय सेवा द्वारा वैराइटी मेवा प्राप्त करनेवाली अधिकारी आत्मा भव

कहा जाता है ''करो सेवा तो मिले मेवा''। ईश्वरीय ज्ञान देना ही ईश्वरीय सेवा है। जो यह सेवा करते हैं उन्हें अतीन्द्रिय सुख का, शक्तियों का, खुशी का वैराइटी मेवा मिलता है। आप ब्राह्मण ही इसके अधिकारी हो क्योंकि आपका काम ही है ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ना और पढ़ाना, जिससे ईश्वर के बन जाएं। तो ऐसी ईश्वरीय सेवा करने से ईश्वरीय फल के अधिकारी बन गये – इसी नशे में रहो।

स्लोगन:- बाप के साथ रहकर कर्म करो तो डबल लाइट रहेंगे।

19-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – घड़ी-घड़ी बाप और वर्से को याद करो, बाप रूहानी सर्जन तुम्हें निरोगी बनने की एक ही दवा बताते – बच्चे, मुझे याद करो''

प्रश्नः- अपने आपसे कौन-सी बातें करो तो बहुत मजा आयेगा?

उत्तरः- अपने आपसे बातें करो – इन आँखों से जो कुछ देखते हैं यह तो सब खत्म हो जाना है। बस, हम और बाबा ही रहेंगे। मीठा बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। ऐसी-ऐसी बातें करो। एकान्त में चले जाओ तो बहुत मजा आयेगा।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) एकान्त में बैठ बाप को याद कर कमाई जमा करनी है। अपने अन्दर चेक करना है – याद के समय मन भागता तो नहीं है? हम कितना समय स्वीट बाप को याद करते हैं?

2) सदा इसी खुशी में रहना है कि हमें बाबा ने रावण के पिंजड़े से मुक्त कर दिया, अभी हम ऐसी दुनिया में जा रहे हैं जहाँ न गर्मी है, न सर्दी। जहाँ सदा ही बसन्त ऋतु है।

वरदानः- मेरे को तेरे में परिवर्तन कर बेफिक्र बादशाह बनने वाले खुशी के खजाने से भरपूर भव

जिन बच्चों ने सब कुछ तेरा किया वही बेफिकर रहते हैं। मेरा कुछ नहीं, सब तेरा है... जब ऐसा परिवर्तन करते हो तब बेफिकर बन जाते हो। जीवन में हर एक बेफिकर रहना चाहता है, जहाँ फिकर नहीं वहाँ सदा खुशी होगी। तो तेरा कहने से, बेफिकर बनने से खुशी के खजाने से भरपूर हो जाते हो। आप बेफिकर बादशाहों के पास अनगिनत, अखुट, अविनाशी खजाने हैं जो सतयुग में भी नहीं होंगे।

स्लोगनः- खजानों को सेवा में लगाना अर्थात् जमा का खाता बढ़ाना।

20-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति “बापदादा” मधुबन

‘‘मीठे बच्चे – तुम्हें गुप्त खुशी होनी चाहिए कि हम परमात्मा बाप की युनिवर्सिटी के स्टूडेन्ट हैं, भविष्य नई दुनिया का वर्सा पाने के लिए पढ़ रहे हैं’’

प्रश्न:- किस स्मृति में सदा रहो तो दैवी गुण धारण होते रहेंगे?

उत्तर:- हम आत्मा शिवबाबा की सन्तान हैं, बाबा हमें कांटों से फूल बनाने आये हैं – यही स्मृति सदा रहे तो दैवी गुण धारण होते रहेंगे। पढ़ाई और योग पर पूरा ध्यान रहे, विकारों से नफ़रत हो तो दैवी गुण आते जायेंगे। जिस समय कोई विकार वार करे तो समझना चाहिए – मैं काँटा हूँ, मुझे तो फूल बनना है।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) किसी की दिल को दु:खी नहीं करना है। अन्दर कोई भी भूत है तो जाँच करके उसे निकालना है, फूल बन सबको सुख देना है।

2) हम ज्ञान सागर के बच्चे हैं तो अन्दर ज्ञान की लहरें सदा उठती रहें। सर्विस की युक्तियाँ रचनी हैं, ट्रेन में भी सर्विस करनी है। साथ-साथ पावन बनने के लिए याद की यात्रा पर भी रहना है।

वरदान:- याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा बाप की मदद का अनुभव करने वाले ब्लैसिंग की पात्र आत्मा भव

जहाँ याद और सेवा का बैलेन्स अर्थात् समानता है वहाँ बाप की विशेष मदद अनुभव होती है। यह मदद ही आशीर्वाद है क्योंकि बापदादा अन्य आत्माओं के मुआफिक आशीर्वाद नहीं देते। बाप तो है ही अशरीरी, तो बापदादा की आशीर्वाद है सहज, स्वत: मदद मिलना जिससे जो असम्भव बात है वह सम्भव हो जाए। यही मदद अर्थात् आशीर्वाद है। ऐसी आशीर्वाद की पात्र आत्मायें हो जो एक कदम में पदमों की कमाई जमा हो जाती है।

स्लोगन:- सकाश देने के लिए अविनाशी सुख, शान्ति वा सच्चे प्यार का स्टॉक जमा करो।

"मीठे बच्चे – अन्तर्मुखी हो याद का अभ्यास करो, चेक करो कि आत्म-अभिमानी और परमात्म-अभिमानी कितना समय रहते हैं"

प्रश्न:- जो बच्चे एकान्त में जाकर आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करते हैं उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- उनके मुख से कभी उल्टा-सुल्टा बोल नहीं निकलेगा। 2-भाई-भाई का आपस में बहुत लव होगा। सदा क्षीरखण्ड होकर रहेंगे। 3-धारणा बहुत अच्छी होगी। उनसे कोई विकर्म नहीं होगा। 4-उनकी दृष्टि बहुत मीठी होगी। कभी देह-अभिमान नहीं आयेगा। 5-कोई को भी दु:ख नहीं देंगे।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) शरीर विनाशी है, उससे प्यार निकाल अविनाशी आत्मा से प्यार रखना है। अविनाशी बाप को याद करना है। आत्मा भाई-भाई है, हम भाई से बात करते हैं – यह अभ्यास करना है।

2) विचार सागर मंथन कर अपनी ऐसी अवस्था बनानी है जो मुख से कभी कोई उल्टा-सुल्टा बोल न निकले। क़दम-क़दम पर अपना पोतामेल चेक करना है।

वरदान:- निमित्त और निर्माण भाव से सेवा करने वाले श्रेष्ठ सफलतामूर्त भव

सेवाधारी अर्थात् सदा बाप समान निमित्त बनने और निर्माण रहने वाले। निर्माणता ही श्रेष्ठ सफलता का साधन है। किसी भी सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए नम्रता भाव और निमित्त भाव धारण करो, इससे सेवा में सदा मौज का अनुभव करेंगे। सेवा में कभी थकावट नहीं होगी। कोई भी सेवा मिले लेकिन इन दो विशेषताओं से सफलता को पाते सफलता स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगन:- सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास हो तो सूर्यवंशी में आ जायेंगे।

''मीठे बच्चे – जितना समय मिले अन्तर्मुखी रहने का पुरूषार्थ करो, बाहरमुखता में न आओ, तब ही पाप कटेंगे''

प्रश्नः- चढ़ती कला का पुरूषार्थ क्या है जो बाप हर बच्चे को सिखलाते हैं?

उत्तर:- 1. बच्चे चढ़ती कला में जाना है तो बुद्धियोग एक बाप से लगाओ। फलाना ऐसा है, यह ऐसा करता है, इसमें यह अवगुण हैं – इन बातों में जाने की दरकार नहीं। अवगुण देखने से मुँह मोड़ लो। 2. कभी भी पढ़ाई से रूठना नहीं। मुरली में जो अच्छी-अच्छी प्वाइंट्स हैं, उन्हें धारण करते रहो, तब ही चढ़ती कला हो सकती है।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) किसी में भी कोई अवगुण दिखाई दे तो अपना मुँह मोड़ लेना है। पढ़ाई से कभी रूठना नहीं है। दत्तात्रेय मिसल सबसे गुण उठाने हैं।

2) बाहर से बुद्धि निकाल अन्तर्मुखी रहने का अभ्यास करना हैं। धन्धेधोरी में रहते देही-अभिमानी रहना है। बहुत बातचीत में नहीं आना है।

वरदान:- ईश्वरीय सेवा के बंधन द्वारा समीप संबंध में आने वाले रॉयल फैमिली के अधिकारी भव

ईश्वरीय सेवा का बंधन नजदीक सम्बन्ध में लाने वाला है। जितनी जो सेवा करता है उतना सेवा का फल समीप सम्बन्ध में आता है। यहाँ के सेवाधारी वहाँ की रॉयल फैमिली के अधिकारी बनेंगे। जितनी यहाँ हार्ड सेवा करते उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहाँ जो आराम करते हैं वह वहाँ काम करेंगे। एक-एक सेकण्ड का, एक-एक काम का हिसाब-किताब बाप के पास है।

स्लोगन:- स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाओ।

23-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – जैसे बाप और दादा दोनों ही निरहंकारी हैं, निष्काम सेवा करते, अपने लिए कोई लोभ नहीं है – ऐसे तुम बच्चे भी बाप समान बनो''

प्रश्नः- गरीब निवाज़ बाप गरीब बच्चों की तकदीर किस आधार पर ऊँच बनाते हैं?

उत्तरः- बाबा कहते – बच्चे, घर में रहते सब कुछ सम्भालते सदा बुद्धि से यही समझो कि यह सब कुछ बाबा का है। ट्रस्टी होकर रहो तो तकदीर ऊँची बन जायेगी। इसमें बहुत सच्चाई चाहिए। पूरा निश्चय हो तो जैसे यज्ञ से पालना होती रहेगी। घर में ट्रस्टी हो शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। बाबा को सब सच बतलाना पड़े।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) सदा इसी नशे में रहना है कि शान्ति, सुख, सम्पत्ति का सागर बाप हमें मिला है, हमें सब कुछ एक से मिलता है। ऐसे बाप के हम सम्मुख बैठे हैं। वह हमें पढ़ा रहे हैं।

2) अपना अहंकार छोड़ बाप समान निष्काम सेवा करनी है। निरहंकारी होकर रहना है। मैसेन्जर-पैगम्बर बन सबको पैगाम देना है।

वरदानः- सर्व पदार्थों की आसक्तियों से न्यारे अनासक्त, प्रकृतिजीत भव

अगर कोई भी पदार्थ कर्मेन्द्रियों को विचलित करता है अर्थात् आसक्ति का भाव उत्पन्न होता है तो भी न्यारे नहीं बन सकेंगे। इच्छायें ही आसक्तियों का रूप हैं। कई कहते हैं इच्छा नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। तो यह भी सूक्ष्म आसक्ति है – इसकी महीन रूप से चेकिंग करो कि यह पदार्थ अर्थात् अल्पकाल सुख के साधन आकर्षित तो नहीं करते हैं? यह पदार्थ प्रकृति के साधन हैं, जब इनसे अनासक्त अर्थात् न्यारे बनेंगे तब प्रकृतिजीत बनेंगे।

स्लोगनः- मेरे-मेरे के झमेलों को छोड़ बेहद में रहो, तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

24-03-24 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त बापदादा" रिवाइज:-13-03-98 मधुबन

''होली शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित होना अर्थात् बाप समान बनना''

- ❖ आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चों को चारों तरफ देख रहे हैं।
- ❖ होलीएस्ट अर्थात् शरीर भी पवित्र हो और आत्मा भी पवित्र हो – ऐसी पवित्रता आप आत्मायें प्राप्त करती हो। मन-वचन-कर्म तीनों ही पवित्र बनने से ऐसी प्रालब्ध प्राप्त होती है।
- ❖ हाइएस्ट बनते हो तब पूजे जाते हो। अभी भी स्व-राज्य अधिकारी बनते हो और भविष्य में भी राजाओं के राजे बनते हो।
- ❖ आप रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो। आप श्रेष्ठ आत्मायें बाप द्वारा ऐसा भाग्य बना रहे हो जो अनुभव करते हो और वर्णन भी करते हो कि हमारे कदम में पदम हैं।
- ❖ पहले भस्म करो, अशुद्धि को, कमजोरी को, बुराई को जलाओ, फिर मनाओ। परमात्म रंग में रंग जाना अर्थात् बाप समान बन जाना। कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बनके काम करो। अभी कोई व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म, व्यर्थ बोल, व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी न हो क्योंकि व्यर्थ संबंध-सम्पर्क भी बहुत धोखा देता है।

वरदान:- होली शब्द के अर्थ को जीवन में लाकर पुरुषार्थ की स्पीड को तेज करने वाले तीव्र पुरुषार्थी भव

हो ली अर्थात् जो बात हो गई, बीत गई उसको बिल्कुल खत्म कर देना। बीती को बीती कर आगे बढ़ना, यही है होली मनाना। बीती हुई बात ऐसे महसूस हो जैसे बहुत पुरानी कोई जन्म की बात है, जब ऐसी स्थिति हो जाती है तब पुरुषार्थ की स्पीड तेज होती है। तो अपनी या दूसरों की बीती हुई बातों को कभी चिन्तन में नहीं लाना, चित्त पर नहीं रखना और वर्णन तो कभी नहीं करना, तब ही तीव्र पुरुषार्थी बन सकेंगे।

स्लोगन:- मेरे पन के अनेक रिश्तों को समाप्त करना ही फरिश्ता बनना है।